SEM-I -हिंदी के विद्धार्थियों का

डॉ.जश[illegible] स्वागत

करता है।

जवानी-मा.चतुर्वेदी

प्राण अन्तर में लिये, पागल जवानी !
कौन कहता है कि तू
विधवा हुई, खो आज पानी?

चल रहीं घड़ियाँ,
चले नभ के सितारे,
चल रहीं नदियाँ,
चले हिम-खंड प्यारे;
चल रही है साँस,
फिर तू ठहर जाये?
दो सदी पीछे कि
तेरी लहर जाये?
पहन ले नर-मुंड-माला,
उठ, स्वमुंड सुमेरु कर ले;

भूमि-सा तू पहन बाना आज धानी
प्राण तेरे साथ हैं उठ री जवानी!

अर्थ-
अन्तर –हृदय

हिम-खंड-
हिमालय
सुमेरु-पर्वत